मुक्ति कॉमिक्स

कौण्डेश से कुन्द कुन्द

प्रकाशकीय

"कौण्डेश से कुण्दकुण्द का द्वितीय संस्करण श्री कुण्दकुण्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंडल ट्रस्ट नागपुर के 'सत्साहित्य प्रकाशन एवं विक्रय केन्द्र के माध्यम से प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यन्त प्रसन्नता है कि हिन्दी के प्रथम संस्करण की अतिशय सफलता के पश्चात द्वितीय संस्करण के साथ कन्नड़ का भी प्रथम संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। यह प्रस्तुत कृति की लोकप्रियता का ही प्रमाण है।

कृति के लेखक डॉ० योगेश चन्द्र जैन का नाम जैन विद्वानों में सम्मान के साथ लिया जाता है। आपकी कृति 'जैन श्रमण' को शास्त्र सभाओं में भी सम्मान के साथ पढ़ा जाता है। बालोपयोगी साहित्य में भी आपकी अभिरूचि धार्मिक कॉमिक्स की ओर आकर्षित हुई। आपकी द्वितीय कॉमिक्स "नाटक हो तो ऐसे भी" प्रकाशित हो चुकी है। जैसे लेखक का विचार है कि २१वीं सदी में प्रवेश के साथ कम से कम २१ कॉमिक्स अवश्य प्रकाशित होनी चाहिये। इस दिशा में वे तत्पर भी है। अन्य कॉमिक्सों का काम भी गतिशील है जिनमें भद्रवाहु, चन्द्रगुप्त आदि के नाम उल्लेखनीय है।

हमारे ट्रस्ट ने भी यह उद्देश्य बनाया है कि मराठी/हिन्दी भाषा में अप्रायः अनुपलब्ध महत्वपूर्ण जनसाहित्य के प्रकाशन के साथ–साथ बालोपयोगी साहित्य भी प्रकाशित किया जाय। अभी तक जो रचनायें प्रकाशित हुई हैं उनमें योगसार (मराठी) रथयात्रा गीत, सम्मेद शिखर पूजन विधान (मराठी) का प्रकाशन किया जा चुका है। तथा पदमनन्दि पंचविशंति का ६०० पृष्ठ को पं० गजान्धर लाल जी कृत के साथ प्रकाशन का कार्य प्रगति पर है। आशा है कि ४ माह में वह भी पाठकों को प्राप्त हो जायेगी इसका लागत मूल्य करीब ८०.०० रुपये आएगा। जबकि उसका विक्रय मूल्य ४०.०० रखना अपेक्षित है। पाठकों से निवेदन है कि वे इसकी कीमत कम करने में भी अपनी सहयोग राशि "श्री कुण्दकुण्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंडल ट्रस्ट, नागपुर" के नाम से ड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर भेजकर कर सकते है। आपके सहयोग की हमें आशा है।

अध्यक्ष–**निर्मलकुमार जैन** *मंत्री*–**अशोक कुमार जैन**

श्री कुण्दकुण्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंडल ट्रस्ट, नागपुर

कौण्डेश से कुन्द कुन्द

शब्द - डॉ. योगेश चन्द्र जैन

चित्र - त्रिभुवन शंकर बालोठिया

भारतवर्ष का दक्षिण प्रान्त संस्कृति एवं सभ्यता के लिए विश्व विख्यात है।

जैन साधुओं की जन्मस्थली होना यहाँ की मिट्टी को प्रकृति का स्वाभाविक वरदान ही है।

कुन्द कुन्द

धरसेन

भूतबलि

पुष्पदन्त

समन्तभद्र

अकलंक

उमास्वामी

रविषेण

प्राचीन काल में यहाँ कौण्डेश नामक एक भोला-भाला ग्वाला रहता था। अपने स्वामी की गायों को चराने के लिए वह जंगल में ले जाया करता था।

गायों को जंगल में छोड़कर एकान्त में झरने के पास प्रकृति का आनंद लिया करता था।

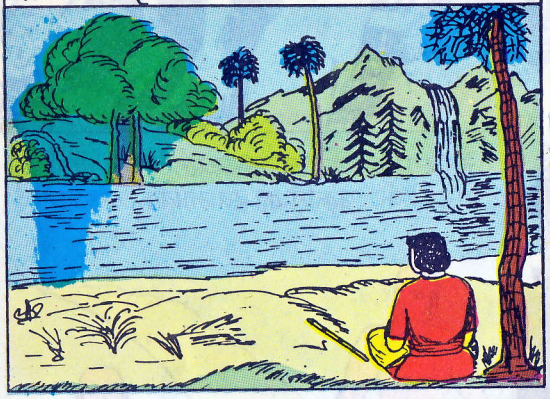

एक दिन सभ्य नागरिकों को जंगल में आते देखकर कौण्डेश को बहुत आश्चर्य हुआ।

मैंने जीवन में तो अभी तक इन लोगों को यहाँ नहीं देखा। ये क्यों आये हैं? चलकर देखना चाहिए।

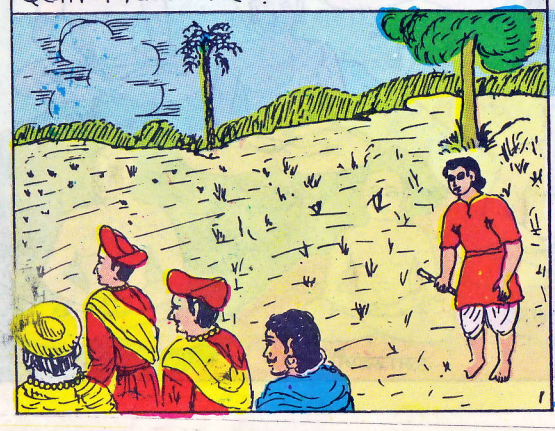

उत्सुकतावश कौण्डेश उन व्यक्तियों के पीछे-पीछे चलने लगा

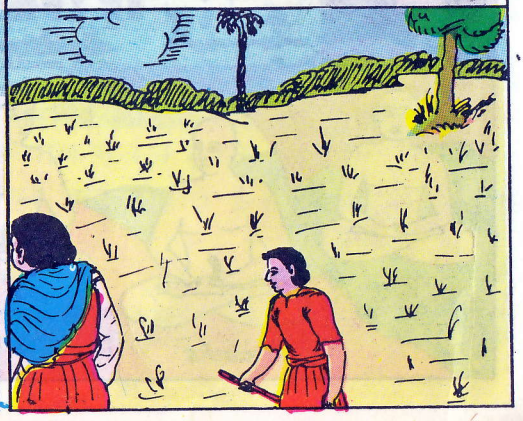

कोमल शरीरवाले ये धनवान लोग नंगे पाँव गर्मी सहते चले जा रहे हैं, कोई विशेष बात अवश्य है।

अरे! वहां कौन वृक्ष के नीचे नग्न बैठा है?

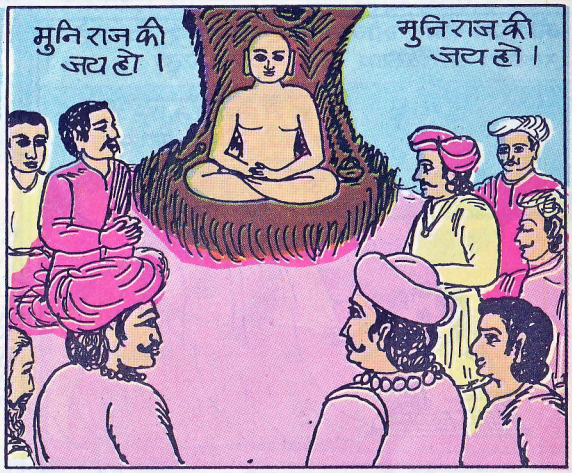
मुनि राज की जय हो।
मुनि राज की जय हो।

सभी जीव भगवान हैं। स्वयं को पहचान कर लीन हो जावें तो सभी सुखी होंगे, कोई दुखी न रहेगा।

कौण्डेश उपदेश समझने की कोशिश करने लगा
लेकिन मैं दुखी ग्वाला, भगवान हो सकता हूँ?

वह शाम तक सोचता रहा कि "सभी तो मुझे मूर्ख कहते हैं। इन मुनिराज ने भगवान् कहा?"

और फिर गायों को हांक कर ले गया। रास्ते में तेज बारिश आरंभ होने से वह भीग गया।

कौण्डेश बिना भोजन किए बिस्तर पर लेटे उपदेश के विषय में सोचता रहा ---।

यदि मैं भगवान बन गया तो गायें कौन चरायेगा?

अरे! गाये भी तो भगवान बन सकती हैं।

कौण्डेश सुबह नहीं उठा तब मां ने उसे जगाया।

अरे! इसे तो तेज बुखार है!

मां ने वैद्य को बुलाकर औषधि दी

एक हफ्ते में बुखार उतर गया, परन्तु वह गायों को जंगल न ले जा सका।

मां गायें ---

रहने दे, अभी और कुछ दिन आराम कर

पंद्रह दिन बाद कौण्डेश जंगल गया। अचानक जंगल जल चुका था, उसे चिन्ता हुई कि गायें कहाँ चराऊंगा और वह चारों ओर देखने लगा तभी - - -

अरे वहाँ वह पेड़ हरा-भरा कैसे है? चल कर देखता हूं।

भयंकर आग के बीच वह पेड़ कैसे सुरक्षित रह गया? यह जानने के लिए वह चल पड़ा।

इस जंगल को जलाया किसने? और उस वृक्ष को बचाया किसने?

तभी उसे मुनिराज के उपदेश का स्मरण हुआ।

विश्व के जड़-चेतन के परिवर्तन स्वतन्त्र हैं। कोई किसी का कर्ता धर्ता नहीं, सभी स्वतन्त्र हैं

वहां जाने पर उसकी निगाह पेड़ के खोखले पर गई, और.

अरे यह क्या है? जरा खोल कर देखूं तो सही.

अरे वाह! इसमें तो कुछ लिखा भी है। पर मैं तो पढ़ना ही नहीं जानता।

शायद इस लिखे ताड़पत्र के कारण यह वृक्ष जला नहीं

यदि मैं पढ़ा लिखा होता तो पढ़ लेता परन्तु अब मैं इसका क्या करूं

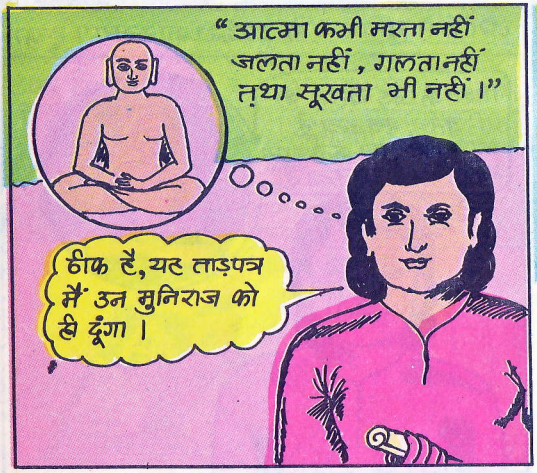
"आत्मा कभी मरता नहीं जलता नहीं, गलता नहीं तथा सूखता भी नहीं।"
ठीक है, यह ताड़पत्र मैं उन मुनिराज को ही दूंगा।

और कौण्डेश जंगल में खोजता हुआ बहुत दूर निकल आया!

चलते-चलते उसे दूर एक वृक्ष के नीचे मुनिराज दिखाई पड़े। कौण्डेश श्रद्धा के साथ आनंदित होता हुआ मुनिराज की ओर चला जा रहा था। उसे सन्तोष हो गया।

"हे मुनिवर! यह ताड़पत्र स्वीकार कर मुझ पर उपकार कीजिए।" यह कहकर कौण्डेश ने ताड़पत्र मिलने की सारी घटना कह सुनायी।

मुनिवर ने प्रसन्नता से कौण्डेश को देखा तो उसने भोलेपन से पूछा कि ---

मुनिवर! क्या यह आत्मा है? क्यों कि यह भी जला व गला नहीं है।

हाँ भव्य! यह आत्मा नहीं परन्तु, इसमें तुम्हारी तुम्हारी आत्मा की बात लिखी है।

तो मुझे वह आत्मज्ञान कब व कैसे प्राप्त होगा? मेरा दुःख कब दूर होगा?

हाँ! हाँ! तुम्हें आत्मज्ञान अवश्य ही होगा और तुम सुखी भी होगे। तुम्हें हजारों वर्षों तक लोग याद करेंगे

वह कैसे?

तुम्हें पता है? आज तुमने संसार के दो महान कार्य किये हैं।

वो, क्या?

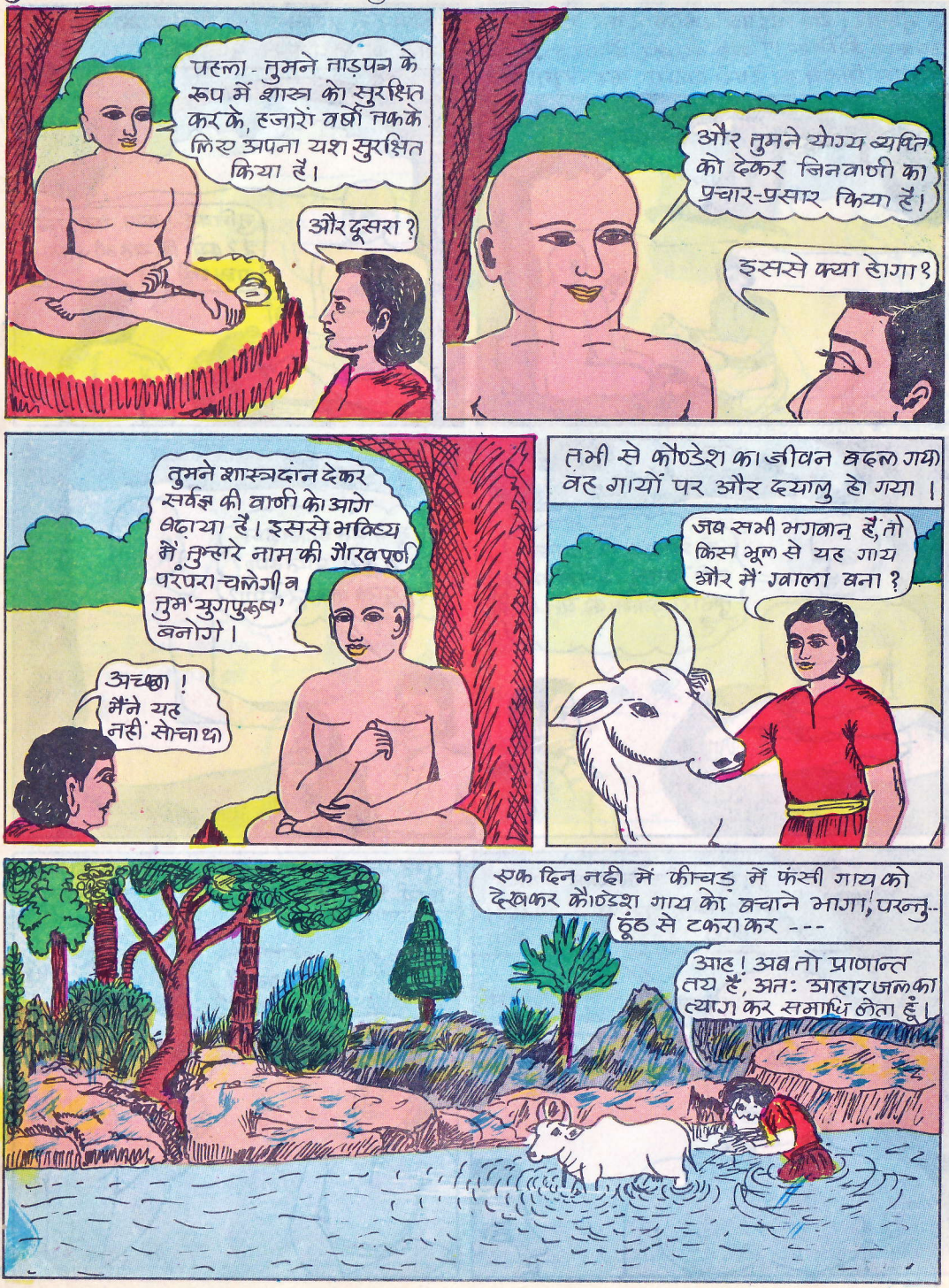
पहला - तुमने ताड़पत्र के रूप में शास्त्र को सुरक्षित करके, हजारों वर्षों तक के लिए अपना यश सुरक्षित किया है।
और दूसरा ?
और तुमने योग्य व्यक्ति को देकर जिनवाणी का प्रचार-प्रसार किया है।
इससे क्या होगा ?
तुमने शास्त्रदान देकर सर्वज्ञ की वाणी को आगे बढ़ाया है। इससे भविष्य में तुम्हारे नाम की गौरवपूर्ण परंपरा चलेगी व तुम 'युगपुरुष' बनोगे।
अच्छा ! मैंने यह नहीं सोचा था।
तभी से कौण्डेश का जीवन बदल गया। वह गायों पर और दयालु हो गया।
जब सभी भगवान् हैं, तो किस भूल से यह गाय और मैं ग्वाला बना ?
एक दिन नदी में कीचड़ में फंसी गाय को देखकर कौण्डेश गाय को बचाने भागा, परन्तु... ठूंठ से टकरा कर ---
आह ! अब तो प्राणान्त तय है, अतः आहार जल का त्याग कर समाधि लेता हूं।

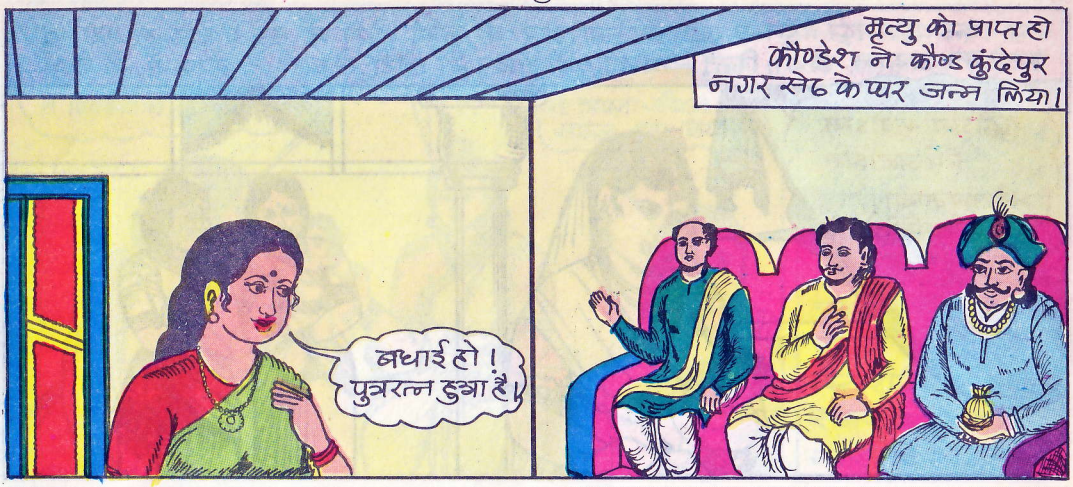
बधाई हो ! पुत्ररत्न हुआ है।
मृत्यु को प्राप्त हो कौण्डेश ने कौण्डकुंदेपुर नगरसेठ के घर जन्म लिया।

पुत्र रत्न की प्राप्ति पर नगरसेठ बहुत प्रसन्न हुआ। सेठ ने नगर में धार्मिक उत्सव किए।
जाओ ! नगरोत्सव की तैयारी करो

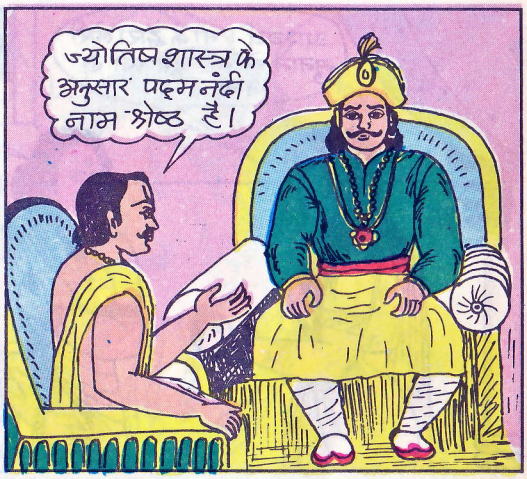
ज्योतिष शास्त्र के अनुसार पद्मनंदी नाम श्रेष्ठ है।

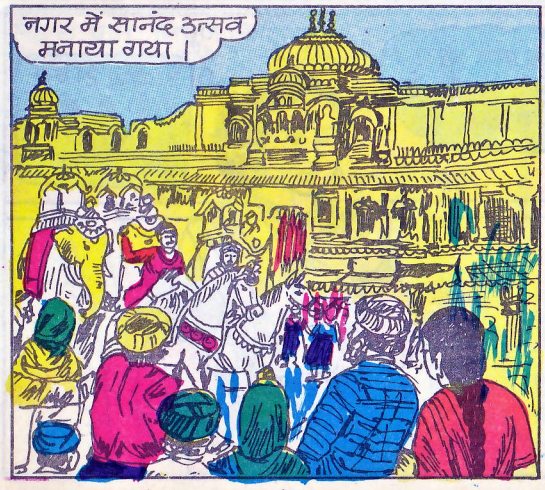
नगर में सानंद उत्सव मनाया गया।

सुना है नगरसेठ का पुत्र बहुत सुन्दर है।
क्या तुमने देखा नहीं ?

एक दिन पद्मनंदी बहुत रो रहा था, परिवार के सभी लोगों ने हर प्रकार से उसे चुप करने का प्रयत्न किया; किन्तु व्यर्थ रहा, तभी मंदिर से लौटी सेठानी ने गोद में ले लिया...

शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि
निरंजनोऽसि
संसारमाया
परिवर्जितोऽसि

आश्चर्य! मां के द्वारा लोरी सुनाने से यह चुप क्यों हो जाता है?

हां बहन मैंने भी सुलाने की कोशिश की थी।

मैंने भी तो 'सोजा बेटा सोजा' कह कर चुप करने की कोशिश की थी, तब भी यह रोता रहा!

मेरा बेटा चुप क्यों होता? वह तो जागृति के गीत ही सुनना चाहता है।

अवश्य ही इस बच्चे में कोई असाधारण बात है।

पद्मनंदि कम सोता है, देर तक जागता हुआ माँ से लोरियां सुनता है। सोचता है, हंसता है, तरह-तरह के प्रश्न करता है। इस बात से सेठानी चिंतित होती है। दिनोंदिन उनकी चिन्ता बढ़ती जाती है। और एक दिन रात्रि को सोते समय अपने पति नगरसेठ को कहती है

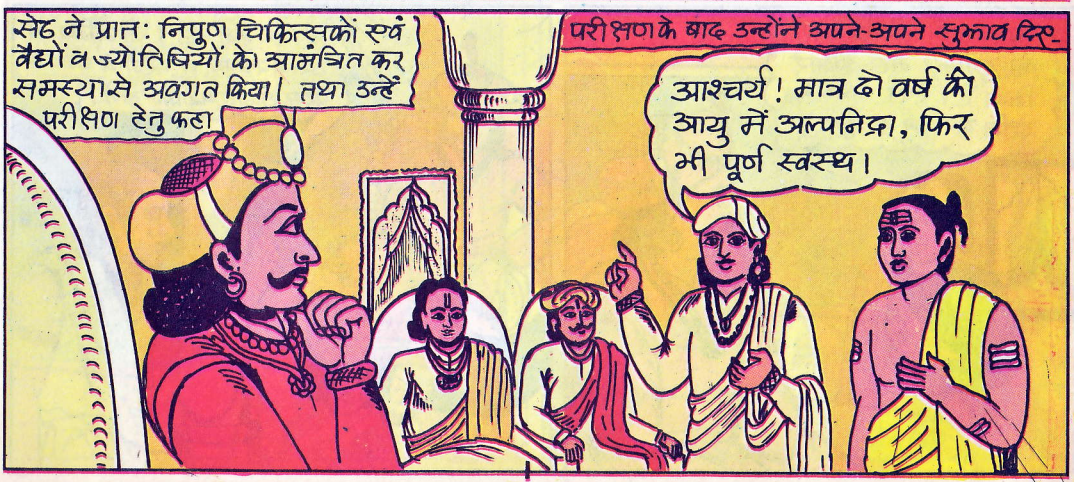

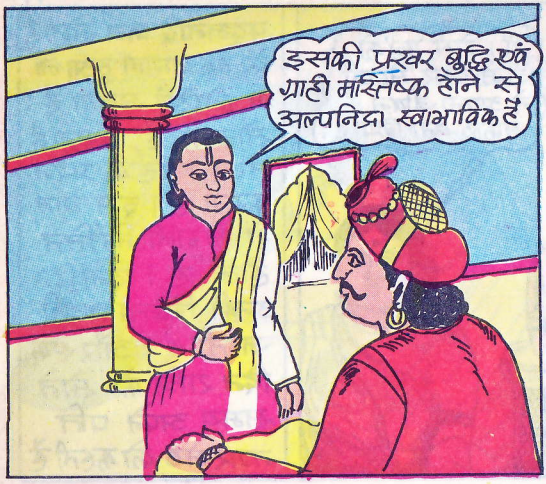
इसकी प्रखर बुद्धि एवं ग्राही मस्तिष्क होने से अल्पनिद्रा स्वाभाविक है

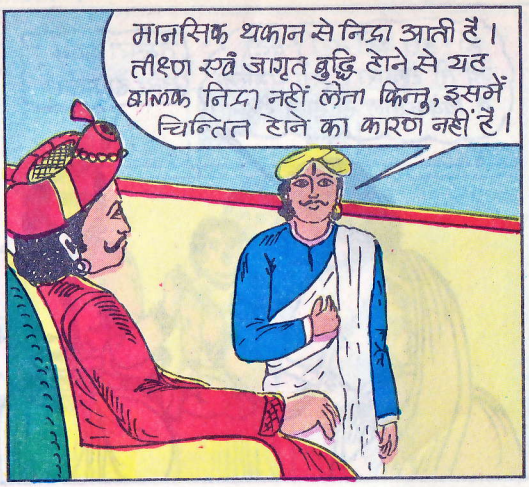
मानसिक थकान से निद्रा आती है। तीक्ष्ण एवं जागृत बुद्धि होने से यह बालक निद्रा नहीं लेता किन्तु, इसमें चिन्तित होने का कारण नहीं है।

यह बालक तेजवान महापुरुष होगा सेठ!
आप लोगो का कहना सत्य है किन्तु ----
किन्तु परन्तु कुछ नहीं। इतनी आयु में ऐसे शुभ लक्षण युक्त शिशु को नहीं देखा। तुम धन्य हो सेठ!

नगरसेठ! आपने हम लोगों को बुलाकर महा-उपकार किया है। ऐसे बालक के दर्शन कर हम कृतकृत्य हुए।

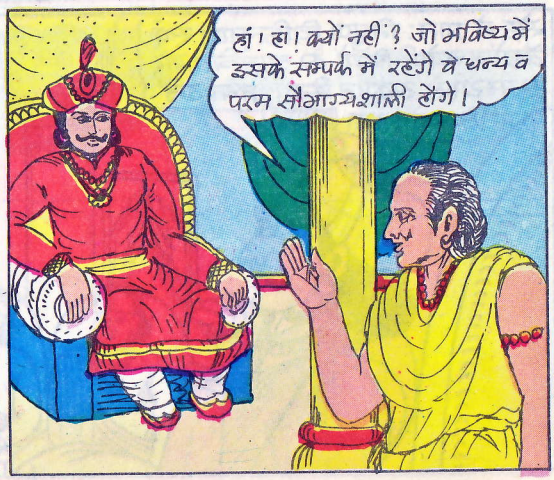
हां! हां! क्यों नहीं? जो भविष्य में इसके सम्पर्क में रहेंगे वे धन्य व परम सौभाग्यशाली होंगे।

आशीर्वाद एवं शुभवचन कहकर सभी वैद्य आदि जाने लगे तब ...

हमारी दक्षिणा मिल चुकी नगरसेठ! बालक का दर्शन कर हम कृतार्थ हुए।

पंडित जी! दक्षिणा ले जाइयेगा

कमल पुष्प की तरह प्रसन्नता बिखेरते पद्मनंदि चार वर्ष का हो चला। माँ (सेठानी) ने प्रारंभिक अक्षर ज्ञान के साथ धार्मिक शिक्षा देना भी आरंभ कर दिया। और एक दिन...

बेटा पद्म! कुछ समय आकर पढ़ लो।

नहीं मां! मैं तुमसे नहीं पढ़ूंगा। अब तुम नई बात नहीं सिखती हो मुझे।

अब इस पद्म को क्या पढ़ाऊं! जो कुछ मुझे ज्ञान था वह तो इसने कुछ महीनों में ही सीख लिया। अब इसकी जिज्ञासा कैसे शांत करूं ? ?

हां एक रास्ता अवश्य है, रात को मैं पढ़ूंगी और सुबह वही पद्म को पढ़ाऊंगी। यही ठीक रहेगा।

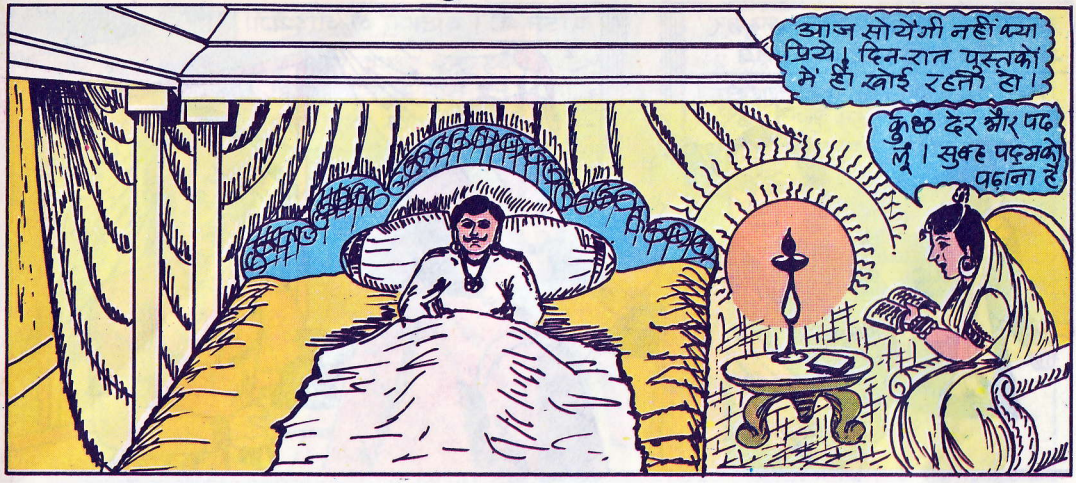
आज सोयेंगी नहीं क्या प्रिये। दिन-रात पुस्तकों में ही खोई रहती हो।
कुछ देर और पढ़ लूं। सुबह पद्मको पढ़ाना है

माँ बनना सरल है। माँ का कर्तव्य निभाना बहुत कठिन है।

शीघ्र ही पद्म के लिए योग्य, विद्वान शिक्षक की व्यवस्था करनी चाहिए, जिससे वह भी विद्वान बनकर सूर्य के समान प्रकाश-वान बने।

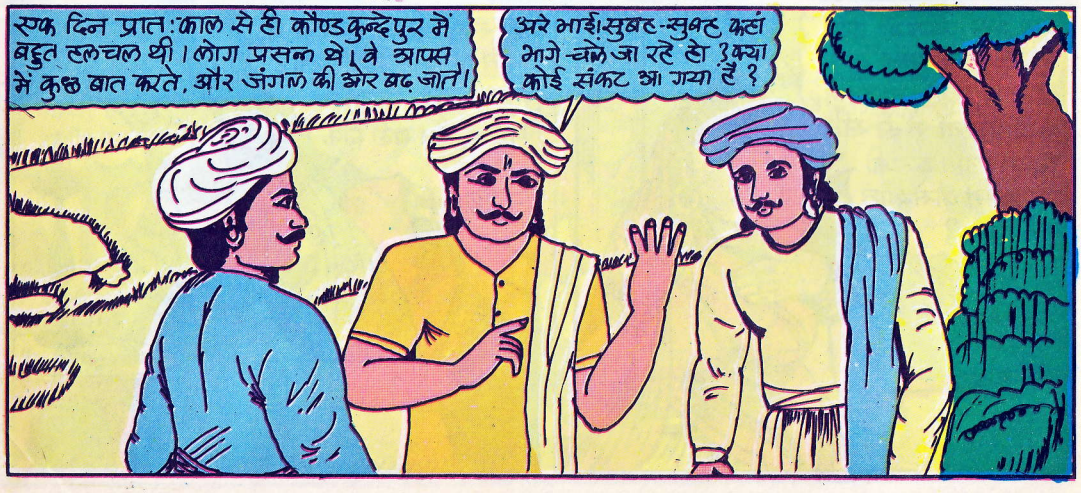
एक दिन प्रातःकाल से ही कौण्डकुन्देपुर में बहुत हलचल थी। लोग प्रसन्न थे। वे आपस में कुछ बात करते, और जंगल की ओर बढ़ जाते।
अरे भाई! सुबह-सुबह कहां भागे-चले जा रहे हो? क्या कोई संकट आ गया है?

क्या तुम अबतक सो रहे हो, अरे! अब तो जागने का समय है भैया!
तुम साफ साफ बात क्यों नहीं कहते? क्या बात है!
तो सुनो- संकट तो अब जाने वाला है, क्योंकि आचार्यश्रेष्ठ जिनचंद्र को नगर के समीप जंगल में देखा गया है।
सुनो धुरेश! आज क्या हो रहा है तुम सब को? सुबह ही कहां..
अरे! तुम्हें नहीं मालुम? कल शाम वयोवृद्ध आचार्य श्री जिन चन्द्र जी को नगर के पास जंगल में देखा गया है।
मां! जल्दी उठो, देखो आज सूर्य का उदय हुआ है।
उठ रही हूं बेटे पद्मा! परंतु तुम्हें क्या हुआ? सूर्योदय तो रोज ही होता है, नया क्या है?

हाँ माँ ! मैं ही क्या, आज तो पूरा नगर ही पागल होगा क्योंकि आज के सूर्य का उदय ही ऐसा है जिससे अज्ञान का नाश होगा। पाप गलेंगे, ज्ञान के प्रकाश से सभी पागल होंगे।
पहेलियाँ क्यों बुझाते हो पद्म तुम तो मुझ से ही पांडित्य करने लगे। सीधी बात बताओ।

बात यह है माँ कि आचार्यवर जिनचन्द्र के रूप में सूर्योदय हुआ है, वे पास के जंगल में विराजमान हैं। सारा नगर उनके दर्शन करने जा रहा है माँ! और मैं भी।
सुनो पद्म ! मैं भी चल रही हूँ।

पद्म माँ की प्रतीक्षा किए बिना ही चला गया। इस बात से माँ सोचती है कि मुनिराज के प्रति इतनी श्रद्धा और निष्ठा कि पद्म मेरा पुत्र होकर तनिक प्रतीक्षा न कर सका।
सेठानी की सोच का बादल घना होने लगा और उनके मस्तिष्क रूपी आकाश पर छा गया। उनको अचानक पद्म के मुनि बनने का खयाल आया कि --- वे स्वयं बुदबुदाने लगी - नहीं ! नहीं! मैं ऐसा कभी नहीं होने दूंगी। मेरा तो एक ही पुत्र है। मैं उसे मुनि नहीं बनने दूंगी। मेरा पुत्र तो भावी नगर-सेठ है, और ज्ञानी भी है मेरा पद्म।

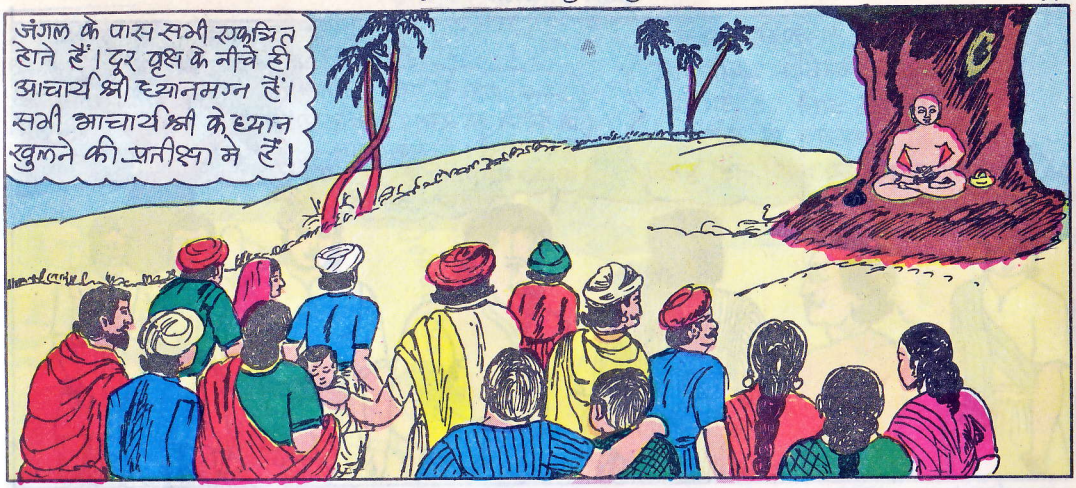
जंगल के पास सभी एकत्रित होते हैं। दूर वृक्ष के नीचे ही आचार्य श्री ध्यानमग्न हैं। सभी आचार्य श्री के ध्यान खुलने की प्रतीक्षा में हैं।

अरे भाई! हम तो प्रवचन सुनने आए थे, परन्तु मुनि राज तो ध्यान में लीन हैं, और मुझे देर हो रही है।
पर हम तो प्रवचन सुनकर ही जायेंगे। आज कुछ देर से दुकान खोलेंगे तो क्या अनर्थ होगा। प्रवचन सुनकर हमें लाभ ही लाभ होगा।
हाँ भैया! प्रवचन से हमें ज्ञान प्राप्त होगा। सुख का मार्ग मिलेगा।

हाँ! तुम सत्य कहते हो। साधुजनों या सज्जनों की संगति को धनव्यय कर के भी प्राप्त करना चाहिए।
भाई। तुम कुछ भी कहो अब मैं और अधिक समय व्यर्थ करना नहीं चाहता। आचार्य का भी कुछ कर्त्तव्य है, कि इतने लोग अपना कार्य छोड़कर यहाँ आए हैं।

तुम्हें जाना है तो जाओ। परन्तु वे मुनि हैं, किसी के अधीन नहीं जो किसी के आने पर उपदेश देवें ही। वास्तव में हमारे पुण्य का उदय अभी नहीं हुआ

इसको क्या हो गया? मुनिश्री के दर्शनों को समय व्यर्थ करना कह रहा है। जिसका भाग्य अच्छा नहीं उसे ऐसे ही अशुभ विचार आते हैं।

सांसारिक कार्य तो चलते ही हैं, रुकते नहीं। फिर मैं क्यों मुनिराज के दर्शन-प्रवचनादि के सुनने से वंचित रहूँ। कितना भी समय हो, मैं प्रवचन सुनकर ही जाऊंगा।

थोड़ा धीमे-धीमे बोलिए आदरणीय! कहीं बातचीत से महाराज का ध्यान भंग न हो। अभी वे सिद्धों से वार्ता कर रहे हैं।

हां! हां! वह बालक ठीक ही कह रहा है, ध्यान की अवस्था तो सिद्ध भगवंतों से वार्ता की ही अवस्था है।

परम सत्य, हमें शांति से उनके कार्य का अनुमोदन कर पुण्य का भागीदार होना चाहिए।

तभी मुनिराज का ध्यान भंग होता है। वे जन समूह को सम्मुख देखकर उपदेश देने लगते हैं।

शुद्धात्मा को जाने बिना दुःख ही दुःख है। सुख के लिए अहिंसा, दया, सत्याचरण करना चाहिए यदि संभव हो तो मुनिधर्म धारण करना चाहिए।

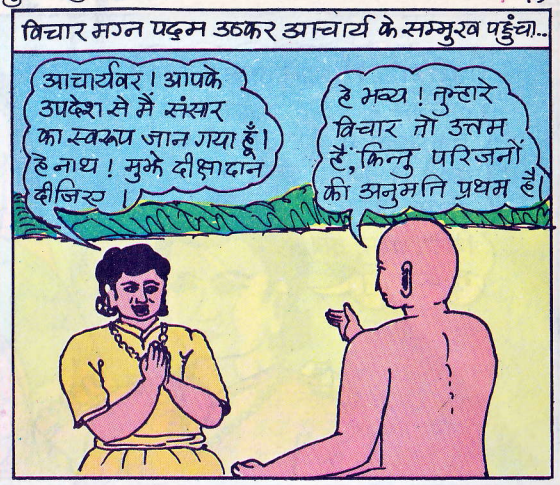

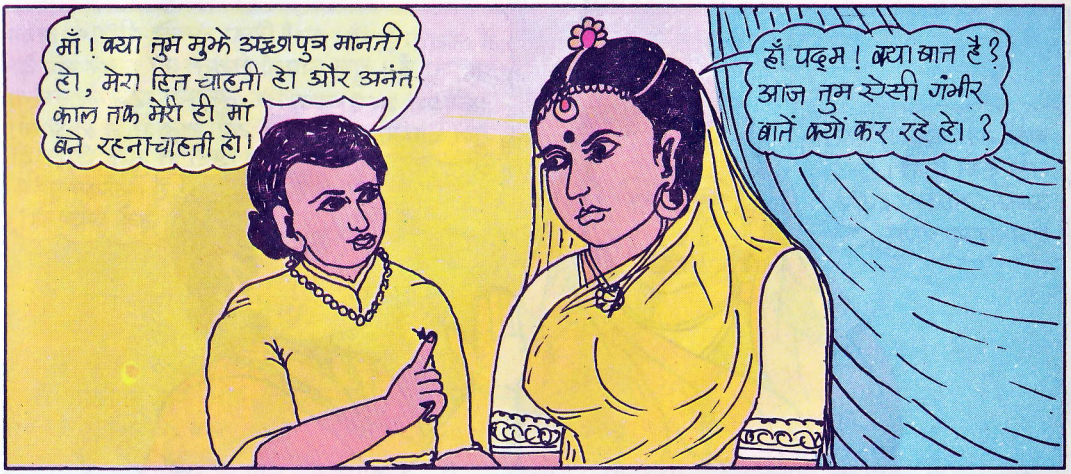

अचानक पुत्र से मुनि बनने की बात सुन माँ सेठानी का हृदय वियोग की कल्पना से ही तड़प गया। उसने तरह-तरह से पद्म को समझाने का प्रयत्न किया, किन्तु सब व्यर्थ। पद्म ने दृढ निश्चय कर लिया था। माँ का प्रयास भी विफल रहा तो उसके नेत्रों से अश्रुधारा फूट निकली..। सभी सेठानी को देखने लगे।

नहीं माँ ! मैं अपने जन्म के लिए लज्जित हूँ । अब अनन्त काल तक जन्म न लूँगा, किसी को कष्ट न दूँगा । इतने वर्ष संयम बिना व्यर्थ किये, परन्तु अब न करूंगा ।

तुम जानते हो पद्म कि मैं तुम्हें कितना प्यार करती हूँ । तुम ही मेरी एकमात्र संतान हो। मैं कैसे अपनी ममता को दबोच लूँ ।

नहीं.. नहीं.. पद्म। ऐसा नहीं होने दूंगी। तुम्हीं अनन्तकाल तक मेरे पुत्र कहलाओगे।

मैं जानता हूँ माँ । इसी लिए तुमसे दीक्षा की आज्ञा चाहता हूँ । तुम अपनी ममता को अमर कर दो अन्यथा इसी जन्म तक तुम्हारा पुत्र कहलाऊंगा तुम अपनी ममता को मेरी राह में न लाओ माँ! तुम्हीं ने मुझे शिक्षा दी है । संयम-पूर्वक मुझे आज्ञा दो ।

पर ऐसा संभव कैसे ? पद्म का कथन असत्य तो नहीं । और फिर माँ का कर्तव्य तो पुत्र को कुमार्ग से रोकना है वियोग की आशा से ही मैं स्वार्थिनी बन रही हूँ.....

धिक्कार है ! मेरा मोह ; जो सन्मार्ग पर चलने वाले पुत्र के सुख में ही बाधा बन रहा है।

तुम तो कैसी धर्म की बातें करती थी। अब कैसे सिसककर रो रही हो?

कौन कहता है कि मैं रोती हूँ? अरे! निर्मोही पुत्र की सिंह गर्जना से मोही माँ का मोह नेत्र-पथ से बह कर पुत्र के पद प्रक्षालित कर रहा है।

फिर ये आंसू क्यों गिर रहे हैं?

ये आंसू नहीं भैया! जन्म-मृत्यु को जीतने वाले पुत्र पर दोनों नेत्र से जल भर कर महा-मस्तकाभिषेक कर रही हूँ।

और सुनो पद्म! तुम्हें मेरे ममत्व की सौगन्ध, तुम अनन्त काल तक मेरे ही पुत्र रहोगे। जाओ में तुम्हें भवनाशिनी जैनेश्वरी दीक्षा की सहर्ष अनुमति प्रदान करती हूं।

ठीक है माँ! मैं जानता था तुम अवश्य अनुमति दोगी। तत्व ज्ञानी जो हो, और मेरी गुरू भी!

बारह वर्ष की आयु में पद्म ने आचार्य जिनचन्द्र से दीक्षा ग्रहण की। अनेक लोगों ने अणुव्रत लिए। पद्म के वैराग्य से प्रभावित होकर दीक्षित हुए। हजारों, लाखों लोग प्रेरित व प्रभावित हुए।

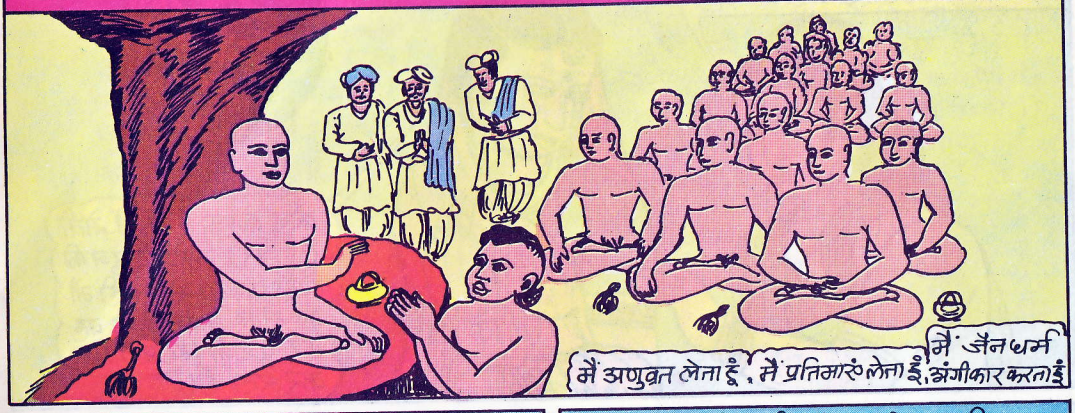

साधु बनकर पद्मनंदी कठोर तपश्चर्या करने लगे। उनकी कीर्ति चारों ओर फैलने लगी।

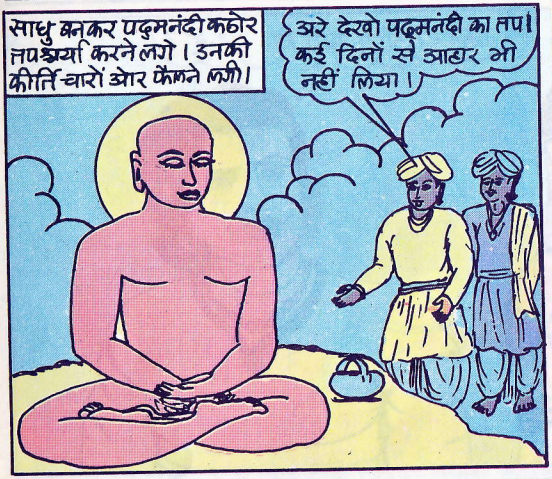

संघ के साधु भी उनकी तपस्या से प्रभावित हुए..

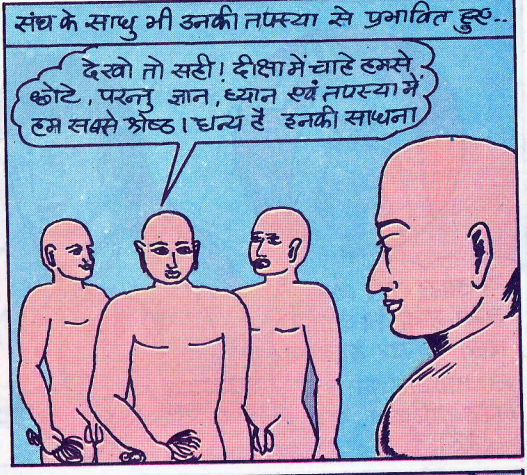

आचार्य जिनचन्द्र वृद्ध हो चले थे। वे दूसरे संघ में जाकर समाधि लेना चाहते थे। और योग्य मुनि को आचार्य भार सौंपकर मुक्ति पाना चाह रहे थे।

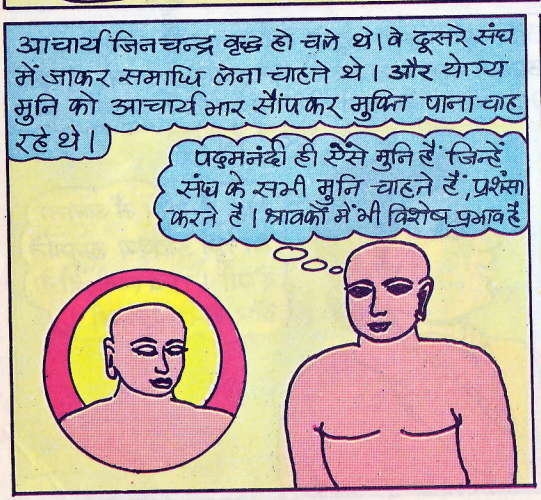

फिर भी उन्होंने संघ के मुनियों से जानकारी ली- मेरे पश्चात् इस संघ के आचार्य का पद कौन मुनि संभाल पायेंगे

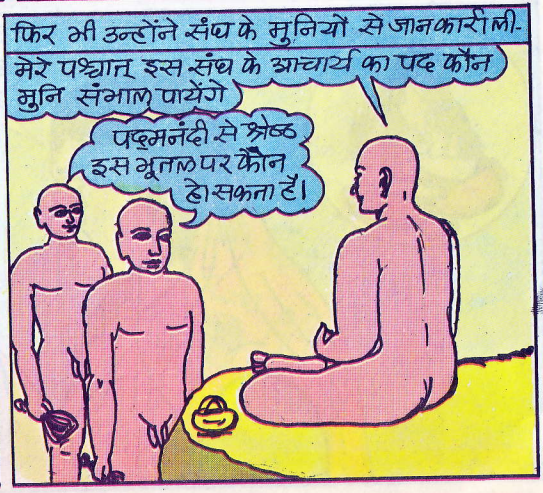

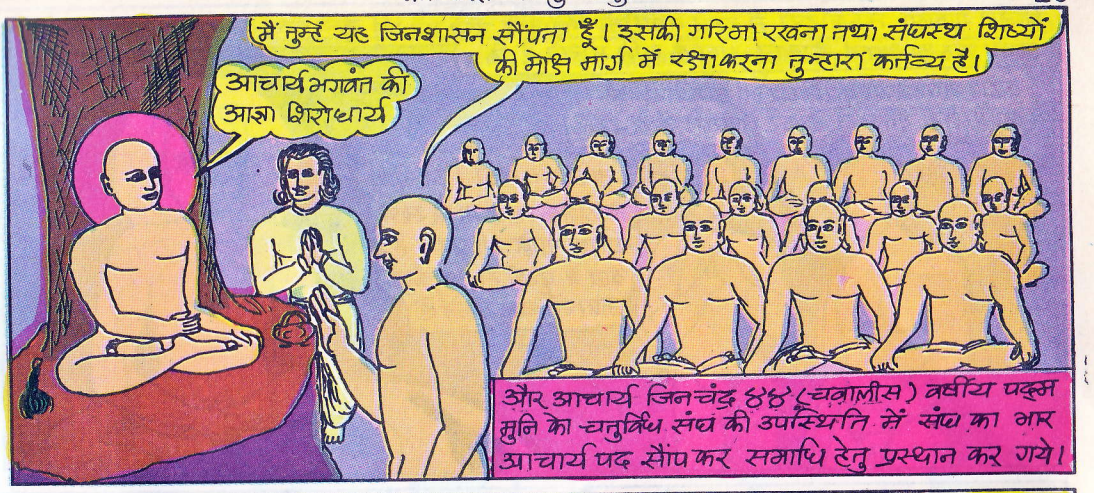
मैं तुम्हें यह जिनशासन सौंपता हूँ। इसकी गरिमा रखना तथा संघस्थ शिष्यों की मोक्ष मार्ग में रक्षा करना तुम्हारा कर्तव्य है।
आचार्य भगवंत की आज्ञा शिरोधार्य
और आचार्य जिनचंद्र ४४ (चवालीस) वर्षीय पद्मनंदी मुनि को चतुर्विध संघ की उपस्थिति में संघ का भार आचार्य पद सौंप कर समाधि हेतु प्रस्थान कर गये।

आचार्य बनने के बाद उनका यश चारों दिशाओं में फैलने लगा। कौण्डकुंदेपुर जन्मस्थान होने से पद्मनंदी 'कुंदकुंद' नाम से प्रसिद्ध हुए।
एक दिन पल्लववंश के राजा शिवस्कन्ध सपरिवार उनके दर्शनार्थ आते हैं।
अच्छा हुआ, राजा के आग्रह से कुंदकुंद एक दिन और ठहर जायेंगे।

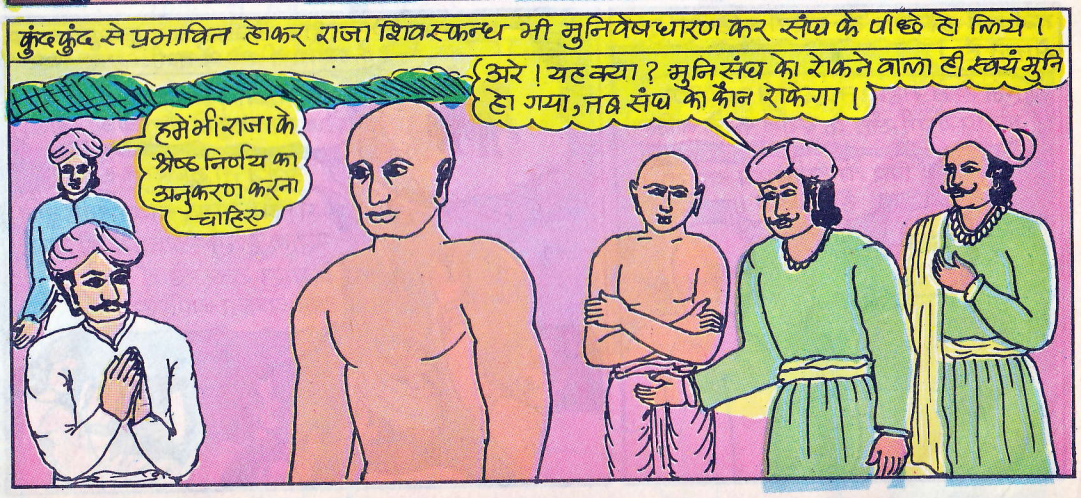
कुंदकुंद से प्रभावित होकर राजा शिवस्कन्ध भी मुनिवेष धारण कर संघ के पीछे हो लिये।
अरे! यह क्या? मुनि संघ को रोकने वाला ही स्वयं मुनि हो गया, अब संघ को कौन रोकेगा!
हमें भी राजा के श्रेष्ठ निर्णय का अनुकरण करना चाहिए

निर्जन गुफाओं, तरुकोटरों में रहते व महीनों निराहार रहने पर भी कुन्दकुन्द का शरीर स्वर्ण सा रहने लगा। यह आश्चर्य देखकर संघ के मुनि सोचते हैं कि -
कठोर तपश्चर्या करने पर भी आचार्य श्री का शरीर क्षीण न होकर तेजस्वी कैसे रहा?
तुम्हें पता नहीं! आचार्य को अनेक ऋद्धियों के साथ चारण ऋद्धि भी प्राप्त है अब वे पृथ्वी से चार अंगुल ऊपर भी चल सकते हैं।
एक दिन स्वाध्याय करते हुए उन्हें किसी आगम का मर्म जानने की तीव्र इच्छा हुई
इसका समाधान महाविदेह के तीर्थंकर सीमंधर भगवान ही कर सकते हैं।
महाविदेह का चक्रवर्ती सीमन्धर भगवान से प्रश्न पूछता है
भगवन! भरतक्षेत्र में इस समय सर्वश्रेष्ठ साधु कौन है?
आचार्य कुन्दकुन्द वहां के धर्मगौरव हैं।
तभी वहां उपस्थित दो चारण ऋद्धिधारी मुनि सोचते हैं--
हमें ऐसे महान तपस्वी व अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी संत के दर्शन करने चाहिए।
फिर तो अविलम्ब चलना ही चाहिए।
भरत क्षेत्र में भक्त जन कुन्दकुन्द आचार्य के दर्शनार्थ खड़े थे तभी---
ओह ये क्या? आकाशमार्ग से ये कौन मानवाकृतियाँ नीचे आ रही हैं।
अरे! ये तो मुनिराज हैं।
हाँ! हाँ! शायद चारण ऋद्धि मुनि-युगल कुंदकुंद आचार्य की गुफा के पास उतर रहे हैं। हमें भी वहीं चलना चाहिए।

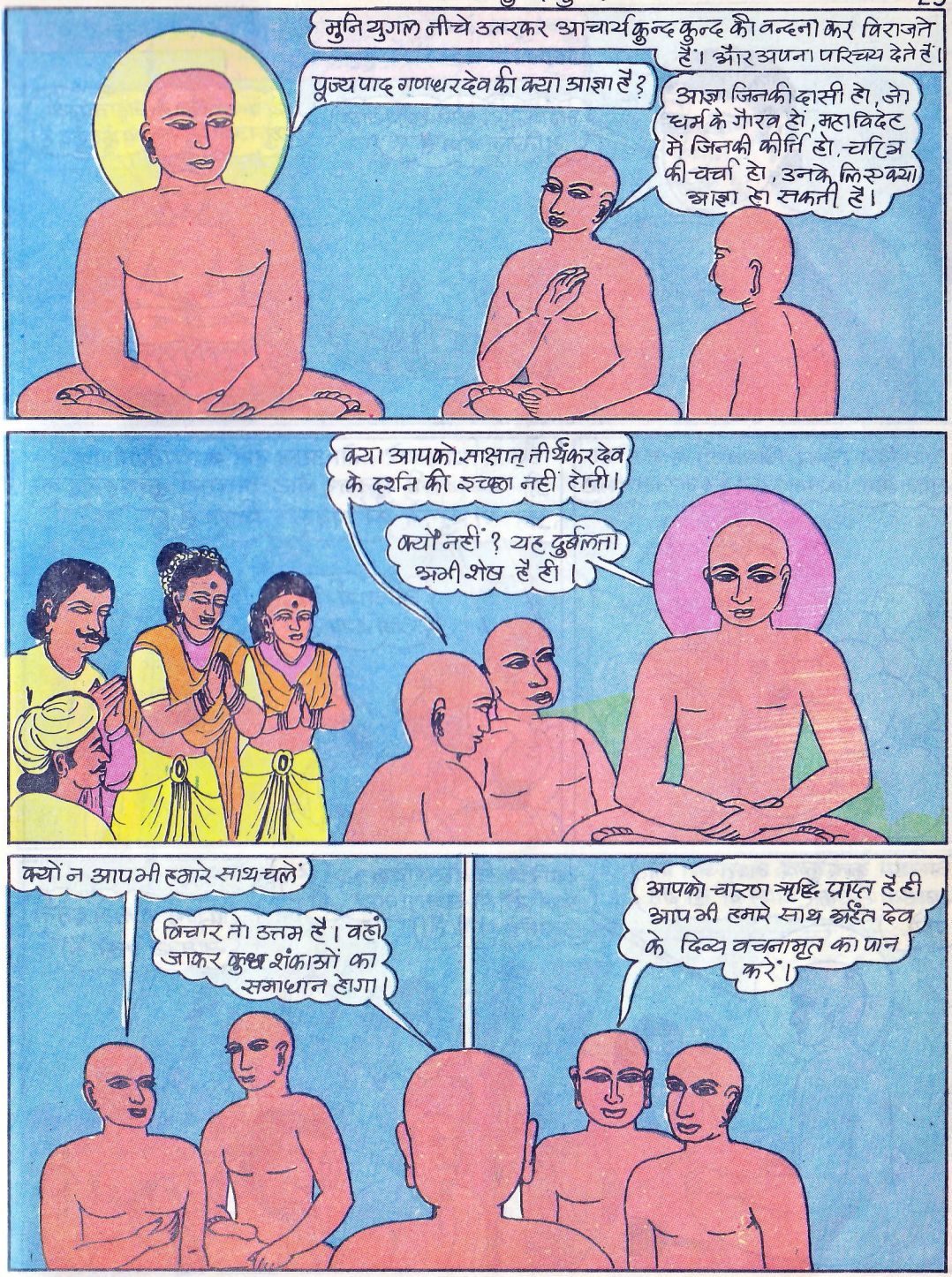
मुनि युगल नीचे उतरकर आचार्य कुन्द कुन्द की वन्दना कर विराजते हैं। और अपना परिचय देते हैं।
पूज्य पाद गणधर देव की क्या आज्ञा है?
आज्ञा जिनकी दासी हो, जो धर्म के गौरव हों, महाविदेह में जिनकी कीर्ति हो, चक्रि की चर्चा हो, उनके लिए क्या आज्ञा हो सकती है।
क्या आपको साक्षात् तीर्थंकर देव के दर्शन की इच्छा नहीं होती।
क्यों नहीं? यह दुर्बलता अभी शेष है ही।
क्यों न आप भी हमारे साथ चलें
विचार तो उत्तम है। वहाँ जाकर कुछ शंकाओं का समाधान होगा।
आपको चारण ऋद्धि प्राप्त है ही आप भी हमारे साथ अर्हंत देव के दिव्य वचनामृत का पान करें।

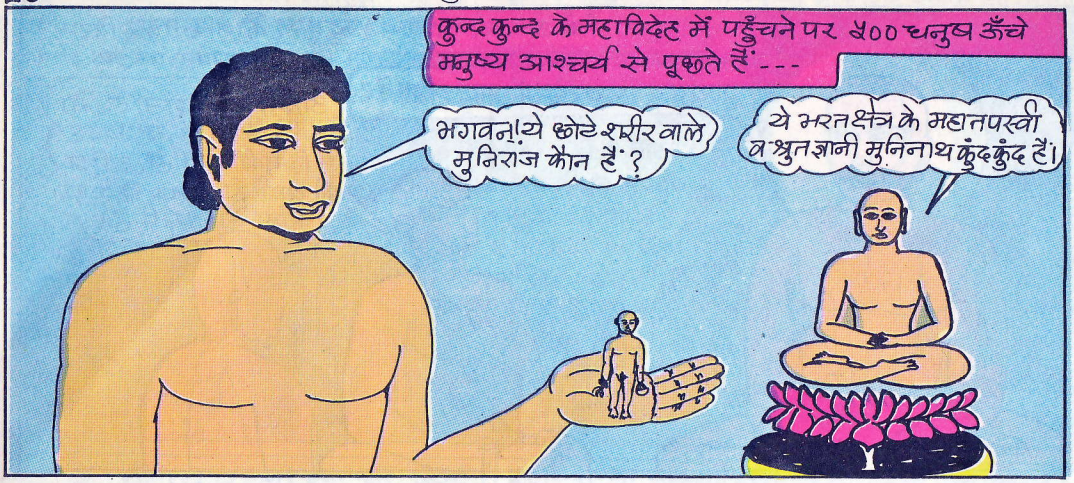
कुन्दकुन्द के महाविदेह में पहुँचने पर ५०० धनुष ऊँचे मनुष्य आश्चर्य से पूछते हैं---
भगवन्! ये छोटे शरीर वाले मुनिराज कौन हैं?
ये भरतक्षेत्र के महातपस्वी व श्रुतज्ञानी मुनिनाथ कुंदकुंद हैं।

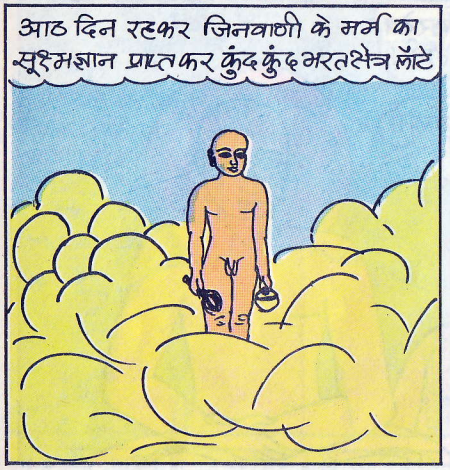
आठ दिन रहकर जिनवाणी के मर्म का सूक्ष्मज्ञान प्राप्त कर कुंदकुंद भरतक्षेत्र लौटे

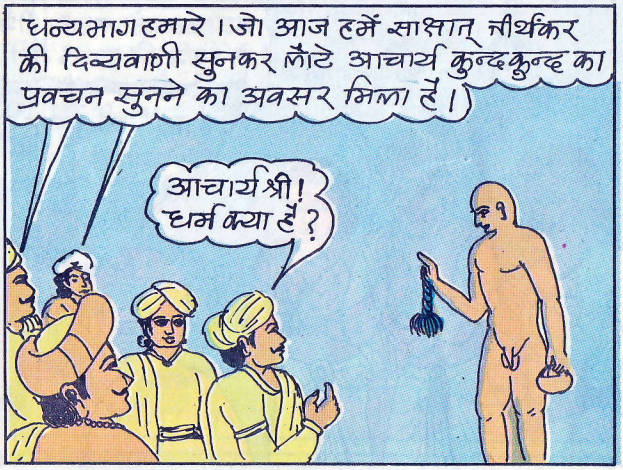
धन्यभाग हमारे। जो आज हमें साक्षात् तीर्थंकर की दिव्यवाणी सुनकर लौटे आचार्य कुन्दकुन्द का प्रवचन सुनने का अवसर मिला है।
आचार्यश्री! धर्म क्या है?

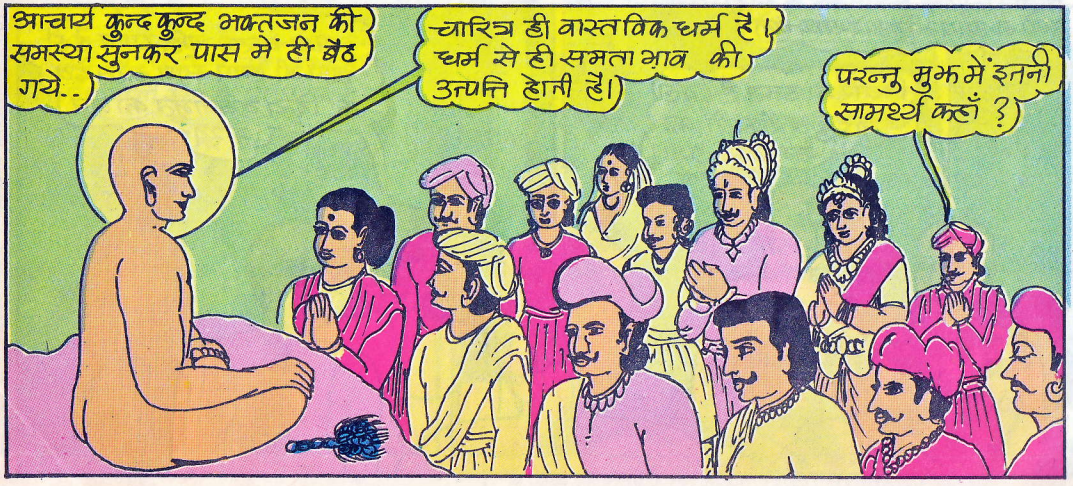
आचार्य कुन्दकुन्द भक्तजन की समस्या सुनकर पास में ही बैठ गये..
चारित्र ही वास्तविक धर्म है। धर्म से ही समता भाव की उत्पत्ति होती है।
परन्तु मुझ में इतनी सामर्थ्य कहाँ?

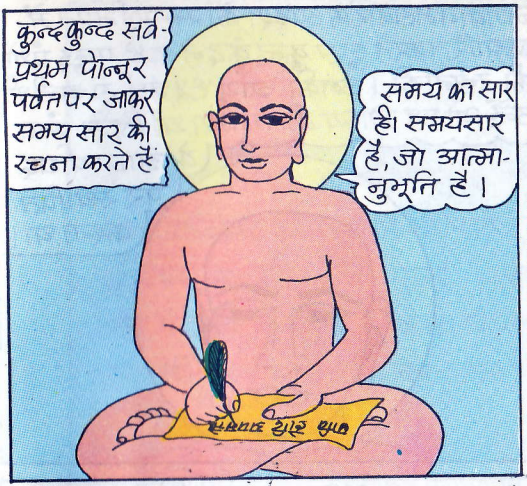
कुन्दकुन्द सर्व-प्रथम पोन्नूर पर्वत पर जाकर समयसार की रचना करते हैं
समय का सार ही समयसार है, जो आत्मा-नुभूति है।

उत्तर भारत विहार के समय साधुओं के आचरण को देखकर कहते हैं कि -
सद्गुणों की ही वन्दना की जाती है। इसके बिना व्यक्ति न तो सच्चा मुनि हो सकता है और न ही श्रावक

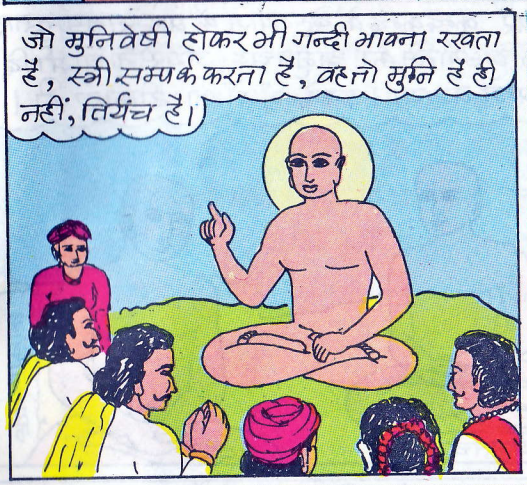
जो मुनिवेषी होकर भी गन्दी भावना रखता है, स्त्री सम्पर्क करता है, वह तो मुनि है ही नहीं, तिर्यंच है।

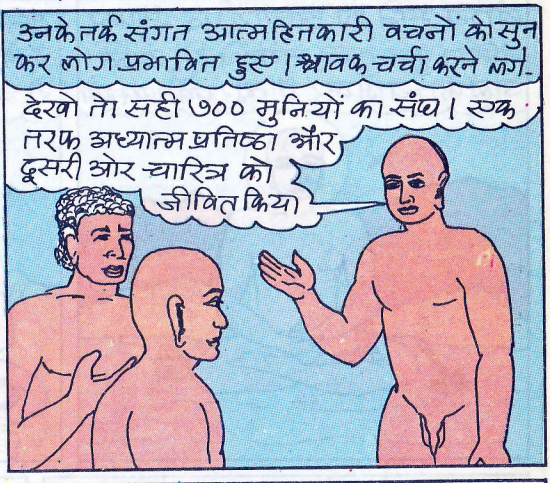
उनके तर्क संगत आत्महितकारी वचनों को सुन कर लोग प्रभावित हुए। श्रावक चर्चा करने लगे-
देखो तो सही ७०० मुनियों का संघ। एक तरफ अध्यात्म प्रतिष्ठा और दूसरी ओर चारित्र को जीवित किया

हां! हां! क्यों नहीं, यदि कुंदकुंदाचार्य न होते तो साधुओं में आए भ्रष्टाचरण को कौन रोक सकता था?

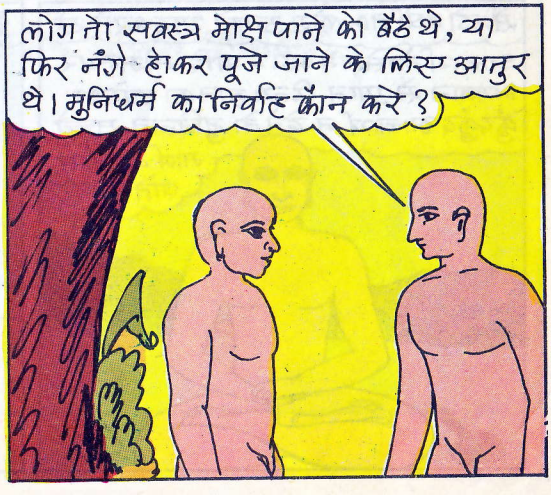
लोग तो सवस्त्र मोक्ष पाने को बैठे थे, या फिर नंगे होकर पूजे जाने के लिए आतुर थे। मुनिधर्म का निर्वाह कौन करे?

अब तो हाथ भी काँपने लगे

भगवान महावीर के उपदेश को सम्पूर्ण भारत में प्रचारित करते हुए कुन्दकुंद ने ८४ पाहुड़ ग्रंथों की रचना की। उनकी आयु ९५ वर्ष हो चली थी उन्हें योग्य शिष्य की तलाश थी जिसे संघ के आचार्य पद पर स्थापित करना था।

योग्य मुनि को आचार्य पद सौंपकर मुनिवर कुन्दकुन्द समाधि हेतु अन्न जल का त्याग कर पौन्नूर पर्वत पर गये

मुनिवर कुन्दकुन्द के देह त्याग के बाद समयानुसार उनके अध्यात्म को अमृतचंद, जयसेनाचार्यादि ने आगे बढाया। उनके ग्रंथों की टीकाएं की।

अमृतचंद्र

जयसेनाचार्य

सैंकडों वर्षों तक लोग उनको याद करते रहे आचार्य देवसेन ने कहा - यदि सीमन्धर भगवान से प्राप्त दिव्य ज्ञान का उपदेश कुंदकुंद आचार्य न देते तो मुनिजन सच्चे मार्ग को कैसे पाते?

कुन्दकुन्द तो कलिकाल में सर्वज्ञ के रूप में थे।

हुए न हैं, न होंगे मुनिन्द कुन्दकुन्द से!

मुनि श्रुतसागर

सम्पादकीय

प्रातः स्मरणीय आचार्य कुन्दकुन्द भारत देश के महत्वपूर्ण आध्यात्मिक सन्त हैं। भारतीय समाज पर उनका अविस्मरणीय अनगिनत उपकार है। आज से 2000 वर्ष पूर्व उन्होंने ही भारतीय साहित्यिकों को साहित्य की सुरक्षा, संरक्षण और संवर्द्धन करना सिखाया है। आत्मविद्या के महान वैज्ञानिक कुन्दकुन्द ने जीवन की सत्यानुभूतियों की 'चिंतन शैली' पर चिंतन करके उसमें नयी शोध-खोज कर भारतीय जन-मानस को नयी दिशा प्रदान की है।

भगवान महावीर के शासन के अन्तिम श्रुत-केवली भद्रबाहु के शिष्य कुंदकुंद ने बाल्यावस्था में ही राग-द्वेष आदि विकारों को ललकारते हुए वीतरागी नग्न दिगम्बर दशा अंगीकार करके मोही जीवों को चमत्कृत कर दिया था। सचमुच में ही बाल्यावस्था का उनका यह चमत्कार नमस्कार के योग्य था। सम्पूर्ण विश्व के जीवों को अपनी मजबूत फौलादी पकड़ करने वाले मोह को लोहे के चने चबाने वाले ये दूध के दांतो वाली कुन्दकुन्द की बाल्यावस्था, स्वयं में चमत्कार है। उनके जीवन चरित्र को प्रस्तुत करने वाली इस कामिक्स की प्रस्तुति के रुप में मेरा नमस्कार है, और चमत्कारी कुन्दकुन्द की उम्र के पाठक बच्चों को जो इसको पढ़कर अपना जीवन सुधारेगें, ज्ञानवान बनेगें, उन्हें हमारा सत्कार है, सत्कार है।

डॉ. योगेश चन्द्र जैन

हमारा आगामी प्रकाशन "तीर्थंकर श्रृषभदेव"